ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2022; 8(1): 424-430
www.allresearchjournal.com
Received: 06-01-2022
Accepted: 04-02-2022

डॉ0 रेखा रानी
प्रवक्ता शिक्षक, शिक्षा विभाग
के0 आर0 महिला महाविद्यालय,
मथुरा, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
डॉ0 रेखा रानी
प्रवक्ता शिक्षक, शिक्षा विभाग
के0 आर0 महिला महाविद्यालय,
मथुरा, उत्तर प्रदेश, भारत

वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में अध्ययनरत् छात्राध्यापक एवं छात्राध्यापिकाओं की सृजनशीलता एवं अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ0 रेखा रानी

सारांश
शोधकर्ता द्वारा चयनित समस्या का मुख्य उद्देश्य वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में अव्ययनरत् छात्राध्यापकों एवं छात्राध्यापिकाओं की सृजनशीलत एवं अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर है, बनायी है इसके लिए शोधार्थी द्वारा अलीगढ के महाविद्यालयों से छः महाविद्यालयो का यादृच्छिक विधि द्वारा चयन किया गया। इन छः महाविद्यालयों से न्यादर्श के रूप में 180 छात्राध्यापक एवं छात्राध्यापिकाओं का चयन किया गया। अध्ययन की प्रकृति को देखकर शोधार्थी ने अपने अध्ययन के लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया शोधार्थी ने ऑकड़ो के विश्लेषण के लिए डॉ0 नरेन्द्र सिंह चौहान एवं गोविन्द तिवारी द्वारा निर्मित रचना शक्ति परीक्षण तथा डॉ0 अहलूवालिया द्वारा निर्मित टीचर एटीटयूड इन्वेन्ट्री मापनी का प्रयोग किया गया और टी परीक्षण का प्रयोग करते हुऐ सार्थकता स्तर 0.05 के मान से तुलना की। जिसके आधार पर यह पाया गया कि वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालय में अध्ययनरत् छात्राध्यापक एवं छात्राध्यापिकाओं की सृजनशीलता एवं अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

कूटशब्द : प्रातिशाख्य, शोधार्थी, उद्देश्य वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित

प्रस्तावना
शिक्षा का कार्य एक असहाय प्राणी के विकास में सहायता देना है जिससे कि वह सुखी, नैतिक एवं कुशल व्यक्ति बन सके। **डी.वी.**
शिक्षा मानव विकास का मूल साधन है इसके द्वारा मनुष्य की मूलभूत या जन्मजात शक्तियों का विकास उनके ज्ञान व कला कौशल में वृद्धि एवं व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है। और उसे शिक्षा के माध्यम से सृजनशील बनाने का प्रयास किया जाता है। जब से इस ब्रह्माण्ड में मानव का पदार्पण हुआ विशेष प्रकार की शक्ति सृजनात्मकता का भी उद्भव हुआ और इसी सृजन शक्ति ने मनुष्य की सीढ़ी–2 बढ़ाते–2 अद्यतन समय में ला कर खड़ा किया। मानव विकास तथा सभी प्रकार की उन्नति का आधार सृजनशीलता होती है। सृजनशीलता का प्रशिक्षण महाविद्यालयों में विशिष्ट स्थान है। प्रशिक्षण महाविद्यालयों में छात्राध्यपकों एवं छात्राध्यापिकाओं की अभिवृत्तियों का विकास किया जाता है। तथा सृजनशीलता बनाने का हर सम्भव प्रयास किया जाता है। इसीलिए शिक्षण–प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत् छात्राध्यापिकायें अपनी सृजनशीलता और अभिवृत्ति का परिचय देते हुए अध्यापक बनने के लिए पूर्ण रूप से प्रयासरत रहते हैं।

विद्यालय रूपी बाग में अध्यापक रूपी माली विद्यार्थी रूपी पौधों के विकास में सहयोग देते है।..... फ्रोवेल
वर्तमान समय में सृजनात्मकता का योगदान सभी क्षेत्रों में देखने को मिलता है सृजनात्मकता के महान व्यक्तियों के उदाहरण इस विश्वजगत में देखने को मिलते है जैसे–ए0पी0जे0 अब्दुल कलाम, डॉ॰ होमी जहाँगीर भाभा, तुलसीदास, कबीरदास, सूरदास, शेक्सपीयर, वुड्सवर्थ, सचिन तेन्दुलकर आदि सभी में सृजनात्मकता का गुण विद्यमान है। सृजनात्मकता का सामान्य पद है– जिसके करने का परिणाम नवीन हो ऐसी क्रिया जो नवीन ढंग से सोचने और विचार करने को प्रेरित करे। क्रो एण्ड क्रो–सृजनात्मकता मौलिक परिणामो का अभिव्यक्त करने की मानसिक प्रक्रिया है। अभिवृत्ति से तात्पर्य व्यक्ति की सोचने समझने की वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति का व्यवहार परिलक्षित होता है।

गुड के अनुसार– ''अभिवृत्ति किसी परिस्थिति, व्यक्ति या वस्तु के प्रति किसी विशेष ढंग से, किसी विशेष सजनता से प्रतिक्रिया करने की तत्परता है।''

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

विद्यार्थी देश का भविष्य होते है इसलिए विद्यार्थियों में नैतिक गुणों के साथ–साथ ही उनकी सृजनात्मकता और अभिवृत्ति का भी समुचित विकास होना चाहिए इसीलिए अगर महाविद्यालयों में शिक्षा की समुचित व्यवस्था नहीं की जायेगी तो महाविद्यालयों में पढ़ने वाले छात्राध्यापक एवं छात्राध्यापिकाओं अपने मार्ग से विमुख हो जायेंगे। विभिन्न प्रकार के शोध ग्रन्थों से सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन करने के पश्चात् पाया कि छात्राध्यापकों एवं छात्राध्यापिकाओं की सृजनशीलता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है। पारिवारिक वातावरण के द्वारा ही छात्र एवं छात्राओं की सृजनशीलता और अभिवृत्ति को विकसित किया जा सकता है।

अतः महाविद्यालयों में अध्ययनरत् छात्राध्यापकों एवं छात्राध्यापिकाओं की सृजनात्मकता और अभिवृत्ति को समझने तथा इन महत्वपूर्ण गुणों को विकसित करने के लिए शोधकर्त्ता ने लघु शोध की आवश्यकता महसूस की।

शोध अध्ययन के उद्देश्य :

शोधार्थी द्वारा निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये गये है–

1. वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के छात्राध्यापकों की सृजनाशीलता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के छात्राध्यापिकाओं की सृजनाशीलता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के छात्राध्यापकों की अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के छात्राध्याकपिकाओं की अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
5. वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के छात्राध्यापक एवं छात्राध्यापिकाओं की सृजनशीलता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
6. वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के छात्राध्यापक एवं छात्राध्यापिकाओं की अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध परिकल्पनाएँ :

शोधार्थी द्वारा निम्नलिखित परिकल्पनाएं निर्धारित की गई हैं–

1. वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के छात्राध्यापकों की सृजनशीलता में सार्थक अन्तर है।
2. वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के छात्राध्यापिकाओं की सृजनाशीलता में सार्थक अन्तर है।
3. वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के छात्राध्यापकों की अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर है।
4. वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के छात्राध्याकपिकाओं की अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर है।
5. वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के छात्राध्यापक एवं छात्राध्यापिकाओं की सृजनशीलता में सार्थक अन्तर है।
6. वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के छात्राध्यापक एवं छात्राध्यापिकाओं की अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर है।

शोध अध्ययन से सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण–

सिंह (2009) ने अपने अध्ययन ''माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों पर सृजनात्मकता के प्रभाव'' के आधार पर निष्कर्ष निकाला कि सृजनात्मकता जैसा गुण बालक का मूलभूत गुण होता है जिसके द्वारा व्यक्ति के नैतिक गुणों का लगातार विकास देखने को मिलता है। गोयल, अर्चना एण्ड सिंह तिरूपति (2010) ने अपना अध्ययन ''क्रियेटिव अमोंग कोलेजिस स्टूडेण्ट्स'' पर अपना अध्ययन किया और निष्कर्ष निकाला कि बुद्धिमत्ता के विकास में सृजनात्मकता की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। भाषा सृजनात्मकता से ही विकसित होती है। विद्यालयों में भाषा सृजनात्मकता छात्रों की अपेक्षा छात्राओं में अधिक अच्छी पायी जाती है। शर्मा एण्ड भल्ला (2011) ने इफेक्ट ऑफ लेटरल थिंकिग ऑन क्रियेटिविटी पर अध्ययन करके यह निष्कर्ष निकाला कि बच्चों पर उनके पूर्वजों का ज्यादा प्रभाव पड़ता है और यह बताया कि माता–पिता अध्यापकों की अपेक्षा बच्चों को ज्यादा सृजनशील बनाते है। वर्मा (2011) ने क्रियेटिव इन रिलेशन टू सेक्स ऑफ ट्राइवल एण्ड नान ट्राइवल स्टूडेण्ट्स पर अपना अध्ययन करके यह निष्कर्ष निकाला कि छात्रों की सृजनशीलता छात्राओं की अपेक्षा अध्ययन से कम होती है और छात्राओं में सृजनशीलता के गुणों का विकास तीव्रता से होता है।

यादव (2010) ने अपना अध्ययन हाईस्कूल के शिक्षकों की कक्षा में विषयों के प्रति अभिवृत्ति के अध्ययन के आधार पर निष्कर्ष निकाला कि शिक्षकों की कक्षा के प्रति पूर्णरूपेण अभिवृत्ति देखने को मिलती है और शिक्षक हाईस्कूल के विद्यार्थियों को पढ़ाने में पूर्णरूपेण रूचि लेते है। सिंह (2010) ने अपना अध्ययन उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की उपलब्धि समायोजन अभिवृत्ति की समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन कर निष्कर्ष निकाला कि उपलब्धि का प्रभाव समायोजन अभिवृत्ति पर पूर्णरूपेण देखने को मिलता है। गोगना (2011) ने ''टीचर्स एटीट्यूड टूवर्ड टीचिंग एण्ड देयर इफेक्टिवनेस'' पर अध्ययन करके यह निष्कर्ष निकाला कि महिला अध्यापक की अभिवृत्ति पुरुष अध्यापक की अपेक्षा अधिक होती है पुरुष अध्यापक की अपेक्षा महिला अध्यापक अपना कार्यभार अधिक जिम्मेदारी से निभाती है। अध्यापक की अभिवृत्ति न केवल उनकी क्रियाशीलता को प्रभावित करती है बल्कि कई और कारक जैसे जीवन योग्यता, कार्य–पर्यावरण, सामाजिक आर्थिक स्थिति आदि सब भी अध्यापक की क्रियाशीलता को प्रभावित करते है। राजू (2011) ने माध्यमिक स्तर के साइंस के विद्यार्थियों की बायोजिकल अभिवृत्ति पर अध्ययन करके यह निष्कर्ष निकाला कि लड़कों की अपेक्षा लड़कियों की अभिवृत्ति अधिक होती है और यह भी बताया कि ग्रामीण स्कूल के विद्यार्थियों की शहरी स्कूलों की अपेक्षा विद्यार्थियों की अधिक अभिवृत्ति होती है।

अनुसंधान विधि :

प्रस्तुत शोध अध्ययन की विषय वस्तु तथा प्रकृति को देखते हुए शोधकर्त्ता ने सर्वेक्षण विधि का चयन किया है।

न्यादर्श :

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधकर्त्ता द्वारा यादृच्छिक प्रतिचयन विधि का प्रयोग करते हुए छः महाविद्यालयों से 180 छात्र एवं छात्राओं का चयन किया गया है जिसमें प्रत्येक महाविद्यालय से 15 छात्र एवं 15 छात्राओं को चुना गया है।

शोध उपकरण :

सृजनशीलता मापनी के लिए सन् 1971 में डॉ0 नरेन्द्र सिंह चौहान एवं गोविन्द तिवारी द्वारा निर्मित रचना शक्ति परीक्षण तथा अभिवृत्ति मापनी के लिए सन् 2001 में डॉ0 एस॰पी॰ अहलूवालिया द्वारा निर्मित टीचर एटीट्यूड इन्वेन्ट्री मापनी का प्रयोग किया गया है।

सांख्यिकीय विधियाँ :

शोधकर्त्ता के द्वारा वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में अध्ययनरत् छात्राध्यापक एवं छात्राध्यापिकाओं की सृजनशीलता एवं उनकी अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन की समस्या के लिए आँकड़ों का संग्रह करने के लिए मुख्य तीन साँख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया है– 1. मध्यमान, 2. मानक विचलन, 3. टी–परीक्षण।

परिकल्पनाओं का परीक्षण एवं विश्लेषण

प्रथम परिकल्पना का परीक्षण (H_1)

तालिका सं0 1: वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में अध्ययनरत् छात्राध्यापकों की सृजनशीलता सम्बन्धी प्राप्तांकों का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–मान

क्र. सं.	प्रतिदर्श	संख्या N	मध्यमान M	मानक विचलन S.D.	मध्यमानों का अन्तर (M)	मानक त्रुटि (SED)	मुक्तांश df	ज–मान t-value	सार्थकता स्तर
1	वित्तपोषित महाविद्यालयों के सृजनशीलता वाले छात्राध्यापक	45	82.4	15.7	0.9	3.5	8.8	0.25	.05
2	स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के सृजनशीलता वाले छात्राध्यापक	45	81.5	17.7					

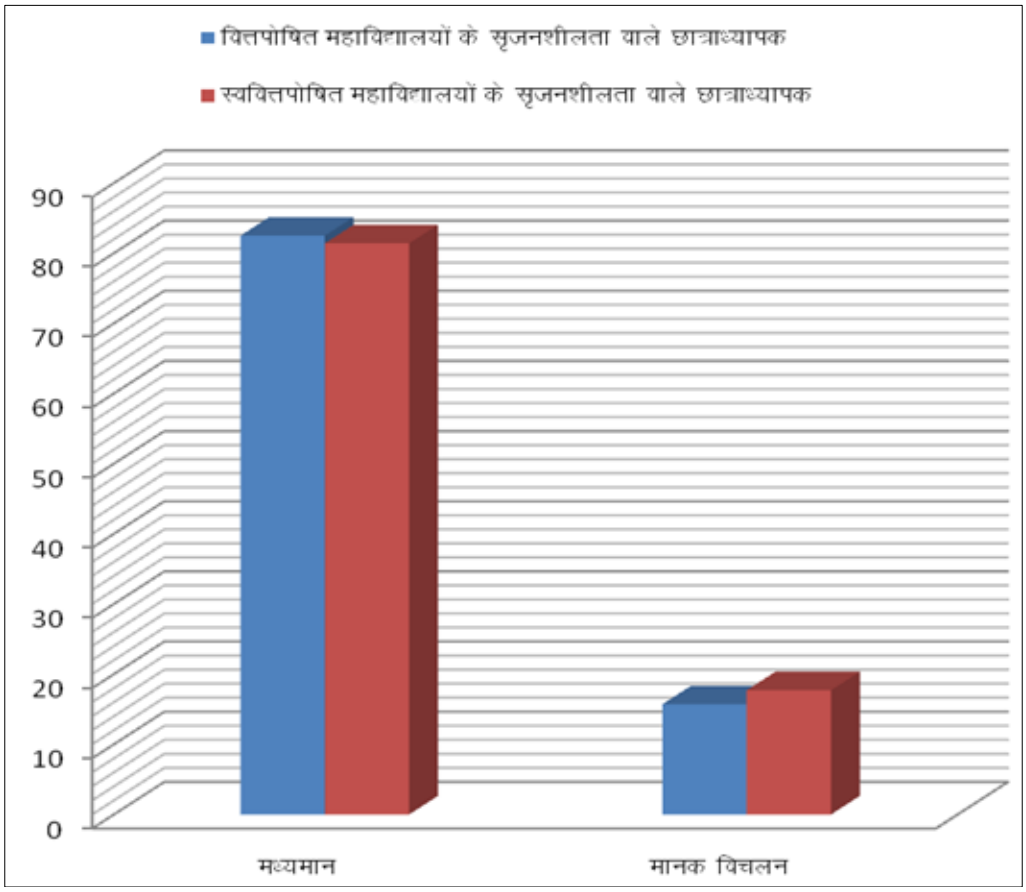

तालिका सं0 1 से स्पष्ट है कि वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के छात्राध्यापकों की सृजनशीलता के मध्यमान क्रमशः 82.4, 81.5 तथा मानक विचलन 15.7, 17.7 हैं जिसका मुक्तांश 88 पर टी का मान 0.25 है जो टी सारणी की सार्थकता स्तर 0.5 के मानक से कम है। अतः हमारी H_1 परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

द्वितीय परिकल्पना का परीक्षण (H_2)

तालिका सं0 2: वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में अध्ययनरत् छात्राध्यापिकाओं की सृजनशीलता सम्बन्धी प्राप्तांकों का मध्यमान मानक विचलन व टी–मान

क्र. सं.	प्रतिदर्श	संख्या N	मध्यमान M	मानक विचलन S.D.	मध्यमानों का अन्तर (M)	मानक त्रुटि (SED)	मुक्तांश df	ज–मान t-value	सार्थकता स्तर
1	वित्तपोषित महाविद्यालयों के सृजनशीलता वाले छात्राध्यापिकायें	45	84.0	15.5	5.61	3.8	8.8	1.47	.05
2	स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के सृजनशीलता वाले छात्राध्यापिकायें	45	78.39	20.5					

तालिका सं0 2 से स्पष्ट है कि वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के छात्राध्यापकों की सृजनशीलता के मध्यमान क्रमशः 84.0, 78.39 तथा मानक विचलन 15.5, 20.5 हैं जिसका मुक्तांश 88 पर टी का मान 1.47 है जो टी सारणी की सार्थकता स्तर 0.5 के मान 1.99 से कम है। अतः हमारी H_2 परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

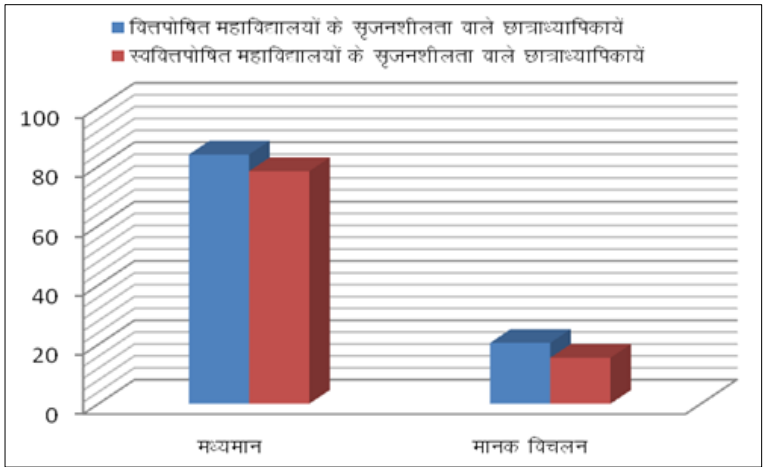

तृतीय परिकल्पना का परीक्षण (H_3)

तालिका सं0 3: वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में अध्ययनरत् छात्राध्यापकों की अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर है सम्बन्धी प्राप्तांकों का मध्यमान, मानक विचलन व टी–मान

क्र. सं.	प्रतिदर्श	संख्या N	मध्यमान M	मानक विचलन S.D.	मध्यमानों का अन्तर (M)	मानक त्रुटि (SED)	मुक्तांश df	ज–मान t-value	सार्थकता स्तर
1	वित्तपोषित महाविद्यालयों के अभिवृत्ति छात्र	45	222.5	34.5	7.4	7.9	88	0.4	.05
2	स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के अभिवृत्ति वाले छात्र	45	219.39	41.4					

तालिका सं0 3 से स्पष्ट है कि वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के छात्राध्यापकों की सृजनशीलता के मध्यमान क्रमशः 222.5, 219.39 तथा मानक विचलन 34.0, 41.4 हैं जिसका मुक्तांश 88 पर टी का मान 0.4 है जो टी सारणी के सार्थकता स्तर 0.5 के मान 1.99 से कम है। अतः हमारी H_3 परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

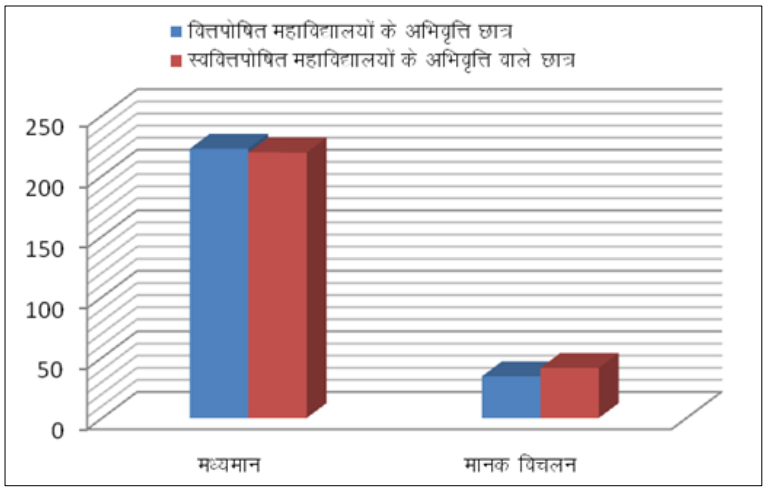

चतुर्थ परिकल्पना का परीक्षण (H_4)

तालिका सं0 4: वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में अध्ययनरत् छात्राध्यापिकाओं की अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर है सम्बन्धी प्राप्तांकों का मध्यमान, मानक विचलन व टी–मान

क्र. सं.	प्रतिदर्श	संख्या N	मध्यमान M	मानक विचलन S.D.	मध्यमानों का अन्तर (M)	मानक त्रुटि (SED)	मुक्तांश df	ज–मान t-value	सार्थकता स्तर
1	वित्तपोषित महाविद्यालयों के सृजनशीलता वाले छात्राध्यापिकायें	45	223.39	42	2.23	8.8	88	0.25	.05
2	स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के सृजनशीलता वाले छात्राध्यापिकायें	45	225.62	42					

तालिका सं0 4 से स्पष्ट है कि वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के छात्राध्यापकों की सृजनशीलता के मध्यमान क्रमशः 223.39, 225.62 तथा मानक विचलन 42, 42 हैं जिसका मुक्तांश 88 पर टी का मान 0.25 है जो टी सारणी के सार्थकता स्तर 0.5 के मान 1.99 से कम है। अतः हमारी H_4 परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

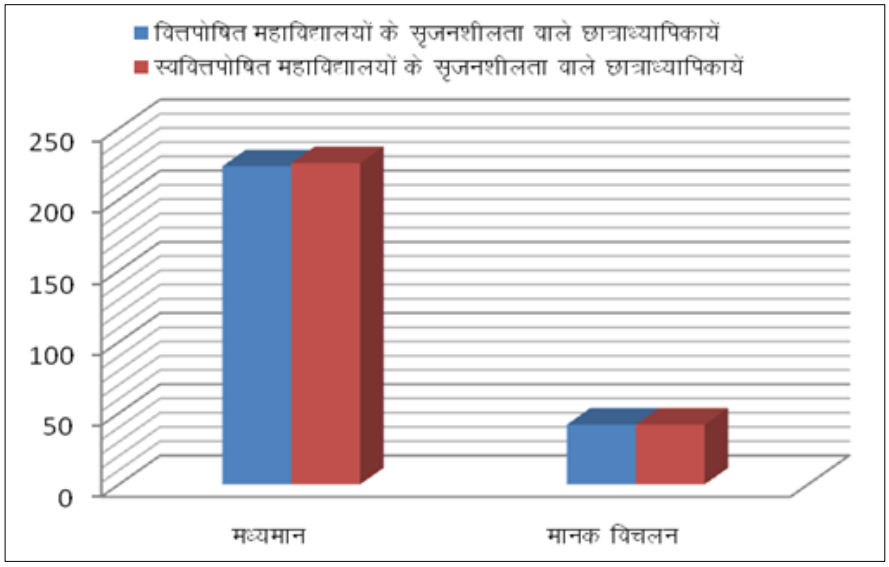

पंचम परिकल्पना का परीक्षण (H_5)

तालिका सं0 5: वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में अध्ययनरत् छात्राध्यापकों एवं छात्राध्यापिकाओं की सृजनशीलता सम्बन्धी प्राप्तांकों का मध्यमान मानक विचलन व टी–मान

क्र. सं.	प्रतिदर्श	संख्या N	मध्यमान M	मानक विचलन S.D.	मध्यमानों का अन्तर (M)	मानक त्रुटि (SED)	मुक्तांश df	ज–मान t-value	सार्थकता स्तर
1	वित्तपोषित महाविद्यालयों के सृजनशीलता वाले छात्राध्यापक एवं छात्राध्यापिकायें	90	81.5	16	2.0	2.03	178	.98	.05
2	स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के सृजनशीलता वाले छात्राध्यापक एवं छात्राध्यापिकायें	90	83.5	10.9					

तालिका सं0 5 से स्पष्ट है कि वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के छात्राध्यापक एवं छात्राध्यापिकाओं की सृजनशीलता के मध्यमान क्रमशः 81.5, 83.5 तथा मानक विचलन 16, 10.9 हैं जिसका मुक्तांश 178 पर टी का मान 0.98 है जो टी सारणी के सार्थकता स्तर 0.5 के मान 1.99 से कम है। अतः हमारी H_5 परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

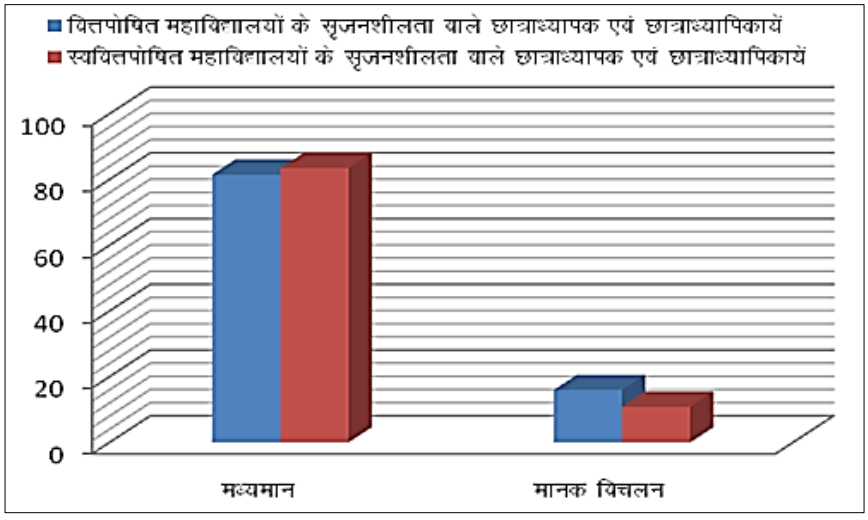

षष्ठ परिकल्पना का परीक्षण (H_6)

तालिका सं0 6: वित्तपोशित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में अध्ययनरत् छात्राध्यापकों एवं छात्राध्यापिकाओं की अभिवृत्ति सम्बन्धी प्राप्तांकों का मध्यमान, मानक विचलन व टी–मान

क्र. सं.	प्रतिदर्श	संख्या N	मध्यमान M	मानक विचलन S.D.	मध्यमानों का अन्तर (M)	मानक त्रुटि (SED)	मुक्तांश df	ज–मान t-value	सार्थकता स्तर
1	वित्तपोषित महाविद्यालयों के सृजनशीलता वाले छात्राध्यापक एवं छात्राध्यापिकायें	90	219.62	41.4	2.4	6.3	178	1.05	.05
2	स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के सृजनशीलता वाले छात्राध्यापक एवं छात्राध्यापिकायें	90	226.28	43.8					

तालिका सं0 6 से स्पष्ट है कि वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के छात्राध्यापक एवं छात्राध्यापिकाओं की सृजनशीलता के मध्यमान क्रमशः 219.62, 226.28 तथा मानक विचलन 41.4, 43.8 हैं जिसका मुक्तांश 178 पर टी का मान 1.05 है जो टी सारणी के सार्थकता स्तर 0.5 के मान 1.99 से कम है। अतः हमारी H_6 परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

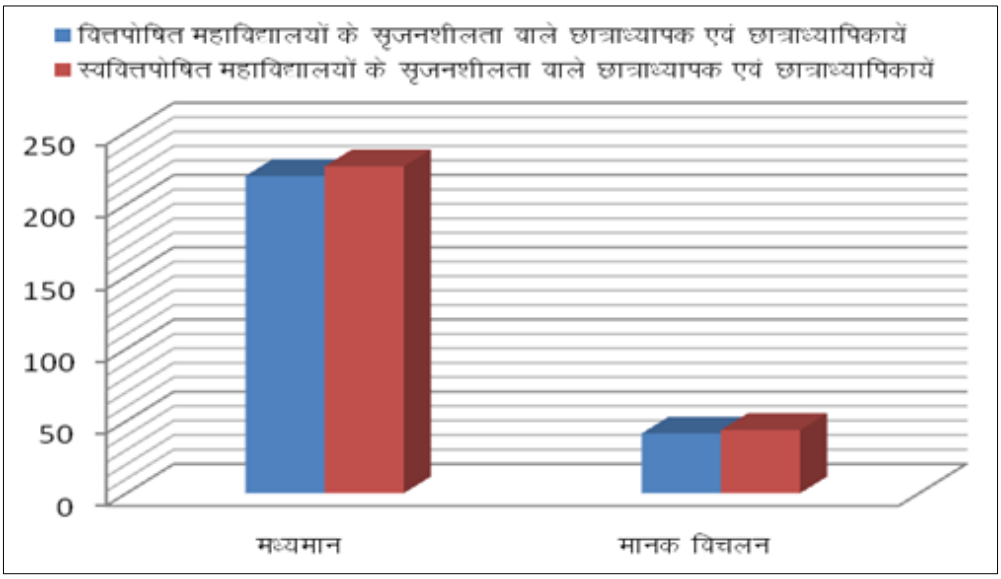

अध्ययन के निष्कर्ष

1. वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में अध्ययनरत् छात्राध्यापक की सृजनशीलता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
2. वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में अध्ययनरत् छात्राध्यापिकाओं की सृजनाशीलता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
3. वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में अध्ययनरत् छात्राध्यापक की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
4. वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में अध्ययनरत् छात्राध्याकपिकाओं की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
5. वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में अध्ययनरत् छात्राध्यापक एवं छात्राध्यापिकाओं की सृजनशीलता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
6. वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में अध्ययनरत् छात्राध्यापक एवं छात्राध्यापिकाओं की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

सन्दर्भ सूची

1. गुप्ता, एस॰पी॰ ''उच्च शिक्षा मनोविज्ञान'', इलाहाबाद, शारदा पुस्तक भवन। 2010,
2. गुप्ता, एस॰पी॰ ''अनुसंधान संदर्भिका'', सम्प्रत्यय, कार्य विधि एवं प्रविधि'', इलाहाबाद, शारदा पुस्तक भवन। 2011,
3. भटनागर, आर॰पी॰ ''शिक्षा अनुसंधान विधि एवं विश्लेषण'', मेरठ : ईगल बुक इण्टरनेशनल। 1995,
4. भटनागर, ए॰बी॰ (2011), ''शैक्षिक अनुसंधान की कार्य प्रणाली'', मेरठ : आर0लाल0 बुक डिपो।
5. पलोड़ एवं लाल (2008), ''शैक्षिक चिन्तन एवं प्रयोग'', मेरठ : आर0लाल0 बुक डिपो।
6. पाण्डेय, रामशकल (2008), ''उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक'' आगरा : अग्रवाल पब्लिकेशन।
7. यादव, प्रतिभा (2007), ''उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक'' आगरा : साहित्य प्रकाशन।
8. रूहेला, एस॰पी॰ (2010), ''शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार'', आगरा : अग्रवाल पब्लिकेशन।
9. शर्मा, आर॰ए॰ (2006), ''शिक्षा अनुसंधान'', मेरठ : आर0लाल0 बुक डिपो।
10. शरतेन्दु, सत्यनारायण (2011), ''विशेष शिक्षा'', इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भण्डार।
11. सारस्वत, मालती (2012), ''शिक्षा मनोविज्ञान की रूपरेखा'', लखनऊ, इलाहाबाद : आलोक प्रकाशन।
12. सिंह, ए॰के॰ (2004), ''मनोविज्ञान समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ'', नईदिल्ली : मोतीलाल बनारसी दास।
13. गौतम, सुशील कुमार (2008), ''स्ववित्तपोषित एवं वित्तपोषित महाविद्यालयों की शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन'' लघुशोध प्रबन्ध बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी।
14. जायसवाल (2008), ''स्ववित्तपोषित एवं वित्तपोषित महाविद्यालयों की शिक्षकों की अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन'' लघुशोध प्रबन्ध बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी।
15. मिश्र, आलोक कुमार (2009), ''उरई शहर के उच्चतर माध्यमिक स्तर के हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यमों के विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्तियों का तुलनात्मक अध्ययन'', लघुशोध प्रबन्ध, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी।
16. शेखर चन्द्र (2009), ''आधुनिकी के प्रति स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की अभिवृत्ति का अध्ययन'', लघुशोध प्रबन्ध बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी।
17. सिंह, सुशील (2009), ''उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों पर सृजनात्मकता का प्रभाव'', लघुशोध प्रबन्ध बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी।
18. सिंह, तेज प्रताप (2009), ''जनपद जालौन के बी0एड0 के छात्राध्यापकों एवं छात्राध्यापिकाओं में सृजनशीलता का तुलनात्मक अध्ययन'', प्राची जर्नल ऑफ साइको–कल्चरल डाइमेन्शन्स, प्राची साइको–कल्चरल रिसर्च एसोसियेशन मयूर विहार, मेरठ–250004।
19. Bhargava, Mahesh. Psycho-lingua, Psycho-linguistic, Association of India Plai, Sanjay Nagar, Agra. 2010-11.
20. Bharadwaj RI. Behavioural Scientist (Bi-annual) Taj Bajar, Agra-202001. 2011.

21. Singh. Indian Journal of Psycho metry & Education, India Psycho-Metric & Educational Research, Association, Agra. 2011.
22. सिंह, डॉ0 शिरीष पाल (2011), ''संदर्भ वैश्विक शैक्षिक परिप्रेक्ष्य'', न्यू दिल्ली पब्लिकेशन–110059।

Educational Websites :

www.ncert.org
www.google.co.in
www.wikepidia.com